AUDITING

B.Com. Honours Part-1, Paper-2

Topic *– Internal Control*

By- Dr. Jitendra Kumar

P.G. Dept. of Commerce & Business Management

H.D. Jain College, Ara, Bhojpur, Bihar- 802301

आन्तरिक नियंत्रण
(Internal Control)

व्यवसाय के प्रत्येक पहलू को योजनाबद्ध तरीके से निर्देशित करने के लिए उपायों को आन्तरिक नियंत्रण कहते हैं। प्रत्येक व्यवसायी अपने व्यवसाय के आंतरिक क्रियाओं को इस प्रकार निर्देशित करना चाहता है कि लेखा में गड़बड़ी, छल-कपट एवं गलतियां कम-से-कम हो और सर्वाधिक लाभ प्राप्त किया जा सके। यह आंतरिक नियंत्रण से ही सम्भव है।

आंतरिक नियंत्रण के अन्तर्गत आने वाली क्रियाओं को दो भागों में बांटा जाता है —

1. लेखा नियंत्रण (Accounting Control) — इसके अन्तर्गत आंतरिक निरीक्षण (Internal Check) तथा आंतरिक अंकेक्षण (Internal Audit) आते हैं।
2. प्रशासनिक नियंत्रण (Administrative Control) इसके अन्तर्गत कर्मचारी नियंत्रण (Personnel Control), उत्पादन नियंत्रण (Production Control), लागत नियंत्रण (Cost Control), किस्म नियंत्रण (Quality Control), मूल्य नियंत्रण (Price Control) तथा अनुसंधान (Research) आदि आते हैं।

विभिन्न विद्वानों द्वारा आंतरिक नियंत्रण की परिभाषाएं दी गयी हैं जो निम्नलिखित हैं—

स्पाइसर एवं पेगलर के अनुसार,— "आंतरिक नियंत्रण से तात्पर्य प्रबन्ध द्वारा व्यापार चलाने के लिए स्थापित वित्तीय व अन्य नियंत्रणों की सम्पूर्ण प्रणाली से है, जिसमें आंतरिक निरीक्षण, आंतरिक अंकेक्षण तथा नियंत्रण के अन्य तरीके सम्मिलित हैं।"

वाल्टर डब्ल्यू. बिग के शब्दों में— "केवल जो नियंत्रण चाहे वह आर्थिक हो अथवा संस्था के प्रबन्ध से सम्बन्धित हो या किसी अन्य किसी प्रकार का हो, आंतरिक नियंत्रण कहलाता है।"

एम० स्टेटल के शब्दों में, "आंतरिक नियंत्रण एक विस्तृत शब्दावली है जो सामान्यतः आंतरिक निरीक्षण एवं आंतरिक अंकेक्षण दोनों को सम्मिलित करती है।"

अतः स्पष्ट है कि आंतरिक नियंत्रण का तात्पर्य व्यवसाय पर प्रत्येक प्रकार के नियंत्रण से है, जिसके अन्तर्गत आंतरिक निरीक्षण, आंतरिक अंकेक्षण तथा अन्य प्रकार के नियंत्रणों को शामिल किया जाता है।